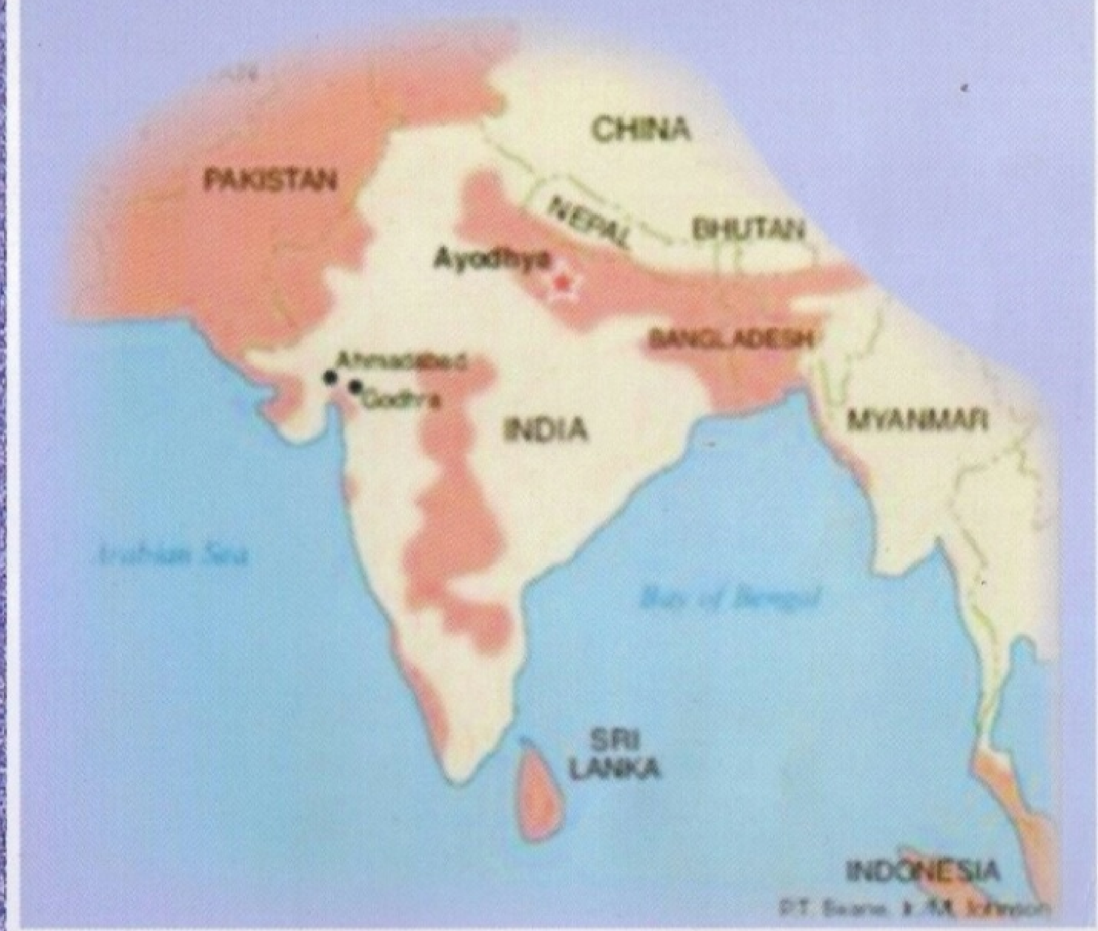
भारत

इस्लामी राज्य की ओर

एक चेतावनी !

Hindus vs. Muslims



डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

भारत इस्लामी राज्य की ओर–
एक चेतावनी !

डा. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

आप जानें या न जानें, मानें या न मानें, परन्तु यह कटु सत्य है कि आज भारत भी तेज़ी से इस्लामी राज्य की ओर बढ़ रहा है। इस्लामीकरण के इस अभियान में भारतीय मुसलमान बड़ी तत्परता के साथ सक्रिय हैं और यहाँ की सभी राजनैतिक पार्टियाँ इसमें सहयोग दे रहीं हैं। मुसलमानों को इसके लिए किसी राजनैतिक पार्टी एवं अन्य प्राचीन या नवीन विचारधारा से प्रेरणा या आदेश लेने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि इस्लाम के धर्म ग्रन्थों में, न केवल भारत; अपितु विश्व भर में, इस्लाम धर्म और इस्लामी राज्य स्थापित करने के सुस्पष्ट आदेश पर्याप्त मात्रा में हैं, भले ही गैर-मुसलमानों को यह बात कितनी ही अप्रिय क्यों न लगे।

इस्लामी विश्व साम्राज्य बनाने की मुख्य नीतियाँ

अल्लाह ने मुसलमानों को विश्वभर में अरबी सांस्कृतिक इस्लामी साम्राज्य स्थापित करने के लिए मुख्यतया दो व्यापक नीतियाँ अनिवार्य रूप से अपनाने का आदेश दिया है–(1) **अल्लाह के लिए जिहाद करना**; और (2) **तेज़ी से मुसलमानों की आबादी बढ़ाना**। यहाँ जिहाद का अर्थ है, गैर-मुसलमानों को किसी भी प्रकार से मुसलमान बनाना और उनके देशों में इस्लामी राज्य व्यवस्था स्थापित करना। इसके लिए मुसलमान बड़ी कूटनीति से, अपनी शक्ति और परिस्थिति के अनुसार मुख्यतया चार प्रकार की जिहाद करते हैं। जब वे किसी देश में कमज़ोर और कम संख्या में होते हैं, जैसे भारत, अमरीका, यूरोप आदि में, तो वे वहाँ (1) सह-अस्तित्ववादी और (2) शान्ति-पूर्ण जिहाद अपनाते हैं; और जब वे शक्तिशाली एवं सत्ता में होते हैं जैसे पाकिस्तान, बंगलादेश एवं अन्य मुस्लिम देशों में तो वे गैर-मुसलमानों और कभी-कभी मुसलमानों पर भी, (3) आक्रामक और (4) शरियाही जिहाद अपनाते हैं। संक्षेप में, जिहाद ही इस्लाम है, और इस्लाम ही जिहाद है। जिहाद के बिना **इस्लाम का कोई अस्तित्व** नहीं है।

कुरान और हदीसों में जिहाद के लिए आदेश

मौलाना मौहम्मद फारूख खां द्वारा अनुवादित, 'कुरान मजीद' (रामपुर, संस्करण, 1980) का मुसलमानों को आदेश हैं—

1. ''वही है जिसने अपने रसूल को मार्ग दर्शन और सच्चे दीन (सत्य धर्म) के साथ भेजा ताकि उसे समस्त 'दीन' पर प्रभुत्व प्रदान करे, चाहे मुशरिकों (मूर्ति पूजकों) को ना-पसन्द ही क्यों न हो।' *(सूरा 9 : आयत 33, पृ. 373)*

2. ''किताब वाले (यहूदी, ईसाई आदि) जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न अन्तिम दिन पर, न उसे हराम करते हैं, जिसे अल्लाह और रसूल ने हराम ठहराया है और सच्चे 'दीन' को अपना 'दीन' बनाते हैं, उनसे लड़ो, यहाँ तक कि वे अप्रतिष्ठित होकर अपने हाथ से ज़ज़िया देने लगें।'' *(9 : 29, पृ. 372)*

3. ''और उनसे (गैर-ईमानवालों) युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना शेष न रहे और 'दीन' (इस्लाम) अल्लाह का हो जाए।'' *(2 : 193, पृ. 158)*

4. ''और तुम उनसे (गैर-ईमानवालों) लड़ो, यहाँ तक कि फ़ितना (उपद्रव) बाकी न रहे और 'दीन' (धर्म) पूरा का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए।'' *(8 : 39, पृ. 354)*

5. ''फिर जब हराम महीने बीत जाऐं तो मुशरिकों (मूर्ति पूजकों) को जहाँ कहीं पाओ, कत्ल करो, और उनको पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे 'तौबा' कर लें, और 'नमाज़' कायम करें और 'ज़कात' दें, तो उनका मार्ग छोड़ दो।'' *(9 : 5, पृ. 368)*

6. ''हे 'ईमानवालो'! उन काफ़िरों (गैर-मुसलमानों) से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं और चाहिए कि वे तुममें सख्ती पाऐं।'' *(9 : 123, पृ. 391)*

7. ''निःसंदेह अल्लाह ने 'ईमान वालों' से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है' कि उनके लिए 'जन्नत' है। वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो वे मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं। वह अल्लाह के जिम्मे (जन्नत का) एक पक्का वादा है कि 'तौरात' और 'इन्जील' और 'कुरान' में और अल्लाह से बड़ कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन हो सकता है ?'' *(9 : 111, पृ. 388)*

8. इतना ही नहीं, जिहाद न करने वाले के लिए अल्लाह की धमकी भी है—''यदि तुम जिहाद पर न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें दुख देने वाली

यातनाएँ देगा और तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को लाएगा और तुम अल्लाह का कुछ न बिगाड़ पाओगे।'' (*9:39, पृ. 374*)

9. ''और जब हम किसी बस्ती को विनष्ट करने का इरादा कर लेते हैं तो हम वहाँ के सुख-भोगी लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें अवज्ञा करने लग जाते हैं, तब उस बस्ती पर वह (यातना की) बात साबित हो जाती है, फिर हम उसे बिल्कुल जड़ से उखाड़ फैंकते हैं, और नूह (पिछले पैगम्बर) के बाद हमने कितनी ही नस्लों को नष्ट कर दिया।'' (*17:16-17, पृ. 509*)

10. ''और हम बस्तियों को जो तुम्हारे गिर्द थीं, तबाह कर चुके हैं'' और हमने तरह-तरह से अपनी आयतें पेश कीं, कदाचित वे पलटें। (*46:27, पृ. 924*)

इसी प्रकार प्रामाणिक हदासों में भी कहा गया है कि—

1. ''अल्लाह के पैगम्बर ने कहा—मुझे अल्लाह ने सभी लोगों के विरूद्ध तब तक युद्ध करते रहने का आदेश दिया हुआ है जब तक कि वे यह स्वीकार न कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य पूज्य प्रभु (ईश्वर) नहीं है और मुझमें विश्वास रखें कि मैं ही अल्लाह का अन्तिम 'रसूल' हूँ और उसमें जिसके साथ मुझे भेजा गया है, और जब वे ऐसा विश्वास व्यक्त कर दें (यानी इस्लाम स्वीकार कर लें) तो उनकी जान और उनके माल की सुरक्षा की मेरी गारण्टी है, सिवाय इसके कि वह कानूनन उचित हो।'' (*मुस्लिम, खंड 1;31-32, पृ. 20-21*)

2. ''पैगम्बर मुहम्मद ने मदीना के बैतउल मिदरास में बैठे यहूदियों से कहा : ओ यहूदियो! सारी पृथ्वी अल्लाह और उसके 'रसूल' की है। यदि तुम इस्लाम स्वीकार कर लो तो तुम सुरक्षित रह सकोगे। मैं तुम्हें इस देश से निकालना चाहता हूँ। इसलिए यदि तुममें से किसी के पास सम्पत्ति है तो उसे इस सम्पत्ति को बेचने की आज्ञा दी जाती है वर्ना तुम्हें मालूम होना चाहिए कि सारी पृथ्वी अल्लाह और उसके 'रसूल' की है।'' (*बुखारी, खंड 4:392ए, पृ. 259-260; मिश्कत, खंड, 2:217, पृ. 442*)

3. ''पैगम्बर मुहम्मद ने मुसलमानों को आदेश दिया : जब तुम गैर-मुसलमानों से मिलो तो उनके सामने तीन विकल्प रखो : (1) उनसे इस्लाम स्वीकारने या (2) ज़िज़िया (टैक्स) देने को कहो। यदि वे इनमें से किसी को न मानें तो, (3) उनके साथ 'जिहाद' (सशस्त्र युद्ध) करो।'' (*मुस्लिम, खंड, 3:4249, पृ. 1137; माजाह, खंड 4:2858, पृ. 189-190*)

4. ''उमर ब. अब्द-अल अज़ीज़ के अनुसार सबसे आखिरी वक्तव्य जो पैगम्बर मुहम्मद ने दिया वह था कि; हे अल्लाह! यहूदियों और ईसाईयों

को समाप्त कर दे (क्योंकि) वे अपने पैगम्बरों की कबरों पर चर्चे (पूजा घर) बनाते हैं। सावधान! अरेबिया में दो धर्म नहीं रहने चाहिए। (पहले चार खलीफाओं के समय में यही नीति पूरी तरह से अपनाई गई और सभी गैर-मुसलमान (ईसाई, यहूदी आदि) अरेबिया से निकाल दिये गए)। (*मुवट्टा मलिक, अ. 511 : 1588-89, पृ. 371*)

यही कारण है कि विश्वभर में जहाँ कहीं भी इस्लामी राज्य होता है, या मुस्लिम बहुसंख्या में और प्रभावशाली होते है तो वे वहाँ गैर-मुसलमानों को इस्लाम स्वीकारने या वहाँ से पलायन करने को विवश कर देते हैं, जैसे कि कश्मीर घाटी, बंग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों से हिन्दुओं को इस्लाम स्वीकारने व पलायन करने को विवश या उन्हें कत्ल कर दिया गया।

तेज़ी से मुस्लिम आबादी बढ़ाना

मुसलमानों की तेज़ी से अपनी आबादी बढ़ाना, भारत में ही नहीं, बल्कि सारे विश्व में, इस्लाम के प्रचार-प्रसार का एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी साधन रहा है। चाहे मुसलमान कितने ही पिछड़े व गरीब क्यों न बने रहें; परन्तु वे कुरान और हदीसों की आज्ञाओं के अनुसार परिवार नियोजन न अपनाने को विवश हैं। इनको इस्लामी धर्मशास्त्रों में अल्लाह की आज्ञा है कि–(1) कोई भी मुसलमान अविवाहित न रहे, (2) वे सामर्थ्यानुसार एक से लेकर चार पत्नियाँ तक रखें, (3) वे मुस्लिम, धार्मिक, आज्ञाकारिणी और अधिक सन्तान देने की क्षमतावाली स्त्रियों से ही शादी करें और अधिक सन्तान उत्पन्न करें ताकि कियामत के दिन, विश्व में, मुसलमानों की संख्या, गैर-मुसलमानों से अधिक हो सके। देखिए कुछ प्रमाण–

1. **''स्त्रियों में से, जो तुम्हारे लिए ज़ायज़ हों, दो-दो, तीन-तीन या चार-चार तक विवाह कर लो।''** (*कुरान 4:3, पृ. 220*)

2. **''आयशा (पैगम्बर की पत्नी) ने बतलाया कि अल्लाह के पैगम्बर ने कहा, 'अल-निकाह' (विवाह) करना मेरा एक सुन्ना है, इसलिए जो कोई मेरे सुन्ना को नहीं अपनाता है, उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं हैं और तुम स्त्रियों से विवाह करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संख्याबल के आधार पर (अन्य) पैगम्बरों के उम्माओं से अधिक उम्मावाला हो जाऊँगा।''** (*सुनान माजाह, खण्ड 3; 1846, पृ.112*)

3. ''उस्मान ब. मुजून ने अविवाहित रहने का फैसला लिया; लेकिन अल्लाह के पैगम्बर ने उसे ऐसा करने को मना किया।'' (*मुस्लिम, खंड 2:3239, पृ.849*)

4. ''एक व्यक्ति ने पैगम्बर के पास आकर कहा : मैंने एक उच्च खानदान की सुन्दर महिला ढूंढ ली है; परन्तु वह सन्तान नहीं देगी। क्या मैं उससे विवाह करूँ ? पैगम्बर ने कहा, 'नहीं'। वह उसी बात को लेकर दूसरी व तीसरी बार आया। तब पैगम्बर ने कहा, उस स्त्री से विवाह करो जो प्यार करने वाली और अधिक सन्तान देने वाली हो; क्योंकि मैं तुम्हारे द्वारा अन्य धर्मावलम्बियों से अधिक संख्या वाला होऊँगा।'' (सुनान दाऊद, खंड 2:2045, पृ. 545-546)

5. इसी प्रकार पैगम्बर मुहम्मद ने विधवा व तलाकशुदा स्त्री की अपेक्षा कुँवारी से शादी करने का आदेश दिया, क्योंकि उसके गर्भाशय अधिक बच्चे देने योग्य होते है। (*मुस्लिम, खंड 2:3460, पृ. 904-905*)

6. इन्हीं आदेशों के बल पर पैगम्बर मुहम्मद ने कहा : ''कियामत के दिन परमेश्वर के देवदूतों (अन्य पैगम्बरों) में से मेरे अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक होगी और मैं ही जन्नत का दरवाज़ा खटखटाने वाला सबसे पहला व्यक्ति होऊँगा।'' (*मुस्लिम, खंड 2:382, पृ. 161*)

इन्हीं धार्मिक आदेशों के कारण मुसलमान, भारत में ही नहीं; बल्कि विश्व भर में, अपनी जनसंख्या बढ़ाने और इसके बल पर राजसत्ता पाने में प्रयत्नशील हैं। इसके लिए वे एक समय में अधिकतम चार पत्नियाँ रखने और गैर-मुसलमानों की लड़कियों को प्रेमजाल में फंसाकर (लविंग जिहाद), धर्मान्तरण एवं अपहरण द्वारा अपनी संख्या बढ़ाते हैं। यूरोप के अनेक देश मुस्लिम जनसंख्या-विस्फोट से भयभीत एवं राजसत्ता खो जाने से चिन्तित हैं। भारत के 1991 और 2001 के जनसंख्या आँकड़े बताते है कि मुसलमानों की वृद्धि दर गैर-मुसलमानों की वृद्धि दर से लगभग दुगनी है। ए.पी.जोशी आदि विद्वानों का मत है कि **''भारत में 2060 तक हिन्दू अल्पमत में हो जायेंगे।''** (*रिलीजियस डैमोग्राफी ऑफ इण्डिया, पृ. 38*)। इसी आकलन के आधार पर पाकिस्तानी विद्वान अनवर शेख ने अपनी पुस्तक ''*इस्लाम एण्ड टेररिज़्म*'' (पृ. 181) में लिखा है कि ***''2060 तक भारत में मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं से अधिक हो जायेगी और वे बन्दूक की एक गोली चलाये बिना ही यहाँ की सरकार पर कब्जा कर लेंगे।''***

कुरान और हदीसों की उपरोक्त आज्ञाओं को और भी अधिक स्पष्ट करते हुए मौलाना सैयद अबुल अला मौदूदी ने अपनी पुस्तक "*फंडामेंटलस ऑफ इस्लाम*" में लिखा है : **"इस्लाम का अन्तिम उद्देश्य मनुष्य का मनुष्य के ऊपर से स्वामित्व समाप्त करना और इसे एक परमात्मा (अल्लाह) की अधीनता में लाना है। इसके लिए तुम्हें अपना सब कुछ, अपनी ज़िन्दगी सहित, जो कुछ तुम्हारे पास है, दाव पर लगाना है और इस उद्देश्य को प्राप्त करने का तरीका जिहाद कहलाता है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज्ज आदि सब तुम्हें इस जिहाद के लिए तैयार करते हैं"** (*पृ. 285*) **"यदि तुम इस्लाम के सच्चे अनुयायी हो तो तुम न किसी अन्य 'दीन' (धर्म) के प्रति अपने के समर्पित कर सकते हो और न तुम इस्लाम को उसका सहभागी बना सकते हो। यदि तुम इस्लाम को सच्चा धर्म मानते हो तो तुम्हें इसे सारे विश्व में फैलाने के लिए अपनी सारी शक्ति लगाने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं है। अतः या तो तुम इसे सारे विश्व में स्थापित कर दो, अथवा इस संघर्ष में अपने जीवन का बलिदान कर दो।"** (*पृ. 300*)

सार की बात यह है कि, इस्लाम का एक मात्र अन्तिम उद्देश्य विश्वभर के गैर-मुस्लिम धर्मों जैसे—हिन्दू धर्म, ईसाइयत, यहूदी मत, बौद्ध मत, कन्फ्यूसियस मत आदि को नष्ट करके उनके देशों में शरियत के अनुसार इस्लामी राज्य व्यवस्था स्थापित करना है क्योंकि **'इस्लाम एक धर्म प्रेरित मुहम्मदीय राजनैतिक आन्दोलन है, कुरान जिसका दर्शन, पैगम्बर मुहम्मद जिसका आदर्श, हदीसें जिसका आचरण शास्त्र, जिहाद जिसकी कार्य प्रणाली, मुसलमान जिसके सैनिक, मदरसे जिसके प्रशिक्षण केन्द, गैर-मुस्लिम राज्य जिसकी युद्ध भूमि और विश्व इस्लामी साम्राज्य स्थापित करना जिसका अन्तिम उद्देश्य है।'** इसीलिए इस्लाम की स्थापना (610 ए.डी.) के बाद से ही आतंकवादी इस्लामी जिहाद, पहले अरेबिया और फिर सारे विश्व में जारी है।

भारत के इस्लामीकरण प्रयासों की एक झांकी (711-2010)

इतिहास साक्षी है कि भारत ने न कभी अरेबिया और न किसी अन्य इस्लामी देश पर कोई हमला किया, फिर भी मुसलमान भारत पर लगातार

आक्रमण करते रहे, आखिर क्यों ? इसके उत्तर में पाकिस्तानी विद्वान अनवर शेख ने अपनी पुस्तक *''इस्लाम एण्ड टैररिज्म''* (*पृ. 121*) में लिखा है– *''वास्तव में पैगम्बर मूत्तियों से घृणा नहीं करता था बल्कि वह भारतीय संस्कृति और उसके प्रबल धार्मिक प्रभाव का विरोधी था जिसका कि मध्यपूर्व पर भी प्रभाव था और सांस्कृतिक दृष्टि से अरेबिया भारत का अंग बन चुका था। इसलिए भारतीय मूल की प्रत्येक वस्तु को अपमानित, अधोपतित एवं नष्ट भ्रष्ट किया जाना चाहिए।''* इतना ही नहीं, *पैगम्बर मुहम्मद अरबियों को भगवा रंग के कपड़े पहनने को मना करता था (मुस्लिम खंड, 4:5173, पृ.1377)*

इसके अलावा कुरान के भाष्यकार अब्दुल्लाह यूसुफ अली ने '*दी होली कुरान*' (पृ.1619-20) और रोबर्ट मोरे ने अपनी पुस्तक *''दी इस्लामिक इनवेज़न''* (पृ.211-215) में माना है कि उस समय अरेबिया, मिस्र, टर्की, यमन, मैसोपोटामिया आदि देशों में चन्द्रदेव की नर रूप में पूजा होती थी। चन्द्रदेव के अनेक मन्दिर भी थे, यह सिद्ध करता है कि उस समय अरब देशों में हिन्दू संस्कृति का प्रभाव था। शायद इसलिए प्रारम्भ से ही, पहले अरबों और बाद में, तुर्कों, मंगोलों, अफ़गानों आदि ने भारत को इस्लामी राज्य बनाने के लिए लगातार अनेक हमले किए जिनका हिन्दू शूरवीर उसका बहादुरी से विरोध करते रहे।

इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद (570-632 ए.डी.) और पहले खलीफ़ा अबूबकर (632-634 ए.डी.) के काल में भारत पर कोई हमला न हो सका। दूसरे खलीफा उमर (634-644) से लेकर पांचवें खलीफ़ा मुवैया (661-680) और 695 ए.डी. में अल हज्जाज़ तक के सभी दसों हमलों को हिन्दू राजाओं ने विफल कर दिया। (*मिश्रा, हिन्दू रेज़िस्टेंस टू अर्ली मुस्लिम इनवेडर्स, पृ. 16-18; पालीवाल, जिहाद क्या और क्यों ? पृ. 66*) परन्तु 711-12 में अल-हज्जाज के दामाद मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर हमला किया। यहाँ ब्राह्मणों के अंधविश्वास एवं बौद्धों और राजा दाहिर के वज़ीर सिस्कार के विश्वासघात के कारण राजा दाहिर जून 712 में मारे गए।

पश्चिमोत्तर के काबुल, जाबुल और सिंध के पराक्रमी हिन्दू राजाओं ने छः सौ वर्षों (636-1206 ए.डी.) तक भारत में इस्लामी राज्य स्थापित नहीं

होने दिया। मुसलमानों की धोखाधड़ी, छल कपट व विश्वासघात के कारण, तथा महाराजा पृथ्वीराज चौहान की कपट से हत्या के बाद, 1206 से 1757 तक भारत के कुछ भागों में मुसलमानों का राज रहा, सम्पूर्ण भारत में कभी नहीं। इन पाँच सौ वर्षों में भी विजयनगरम् के राजाओं, राजस्थान के राजपूतों जैसे राणा कुम्भा (1430-1469), राणा सांगा (1509-1529), महाराणा प्रताप (1530-1569) आदि तथा, क्षत्रपति शिवाजी (1630-1680) एवं गुरू अर्जुनदेव (1581-1606) गुरू तेगबहादुर (1664-1675) एवं गुरू गोविन्द सिंह (1666-1708) आदि सिख गुरूओं ने मुस्लिम सुलतानों से संघर्ष किया।

अंग्रेजों के राज्य काल में (1757-1947) भी स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द आदि अनेक सन्तों ने राष्ट्र जागरण किया और सिखों, जाटों, मराठों आदि नें अंग्रेजों का डटकर विरोध किया। मगर खेद है कि इन सात सौ सालों (1206-1947) में हिन्दू राजा मिलकर इस्लामी व अंग्रेजी राज्य को समाप्त न कर सके।

अंग्रेजों के विरूद्ध पहला स्वतंत्रता संग्राम 1857 में प्रारम्भ हुआ। तब भी मुसलमानों ने खोई सत्ता पाने का प्रयास किया, मगर विफल रहे। राष्ट्रव्यापी हिन्दू आन्दोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने **'बाँटो और राज्य करो'** की नीति अपनाई और अन्त में अंग्रेजों—मुस्लिम लीग और गाँधी-नेहरू-कांग्रेस ने मिलकर 1947 में हिन्दू और मुसलमान के आधार पर देश का बंटवारा कर दिया।'

हिन्दुओ! भूलो मत ! 1947 में हिन्दू-भारत आज़ाद नहीं हुआ बल्कि भारत का विभाजन हुआ जिसका एक भाग पाकिस्तान के नाम से मुसलमानों को दे दिया गया और शेष भारत की सत्ता ईसाई—अंग्रेजों से लेकर मुस्लिम परस्त गांधी-नेहरू-कांग्रेस को दे दी गई। गांधी जी हिन्दुओं को सदा विश्वास दिलाते रहे कि वे भारत का विभाजन कभी स्वीकार नहीं करेंगे और बलपूर्वक कहा कि **''भारत का बंटवारा मेरी लाश पर होगा।''** परन्तु उन्हीं गांधी जी ने विश्वासघात कर 13 जून 1947 को कांग्रेस कार्यकारिणी में भारत विभाजन का समर्थन किया। फिर भी भारत का विभाजन तत्कालीन कांग्रेस कार्यकारिणी की सम्पूर्ण सहमति से नहीं हुआ। 157 सदस्यों ने विभाजन के पक्ष में, 29 ने विरोध में एवं 32 तटस्थ रहे। (*शेषाद्रि, और देश बंट गया, पृ. 207*)

पीड़ा की बात तो यह है कि जब भारत का विभाजन हिन्दू और मुसलमान के आधार पर हुआ तो विभाजन से पहले, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच, हिन्दू-मुस्लिम आबादी की अदला-बदली क्यों नहीं की गई ? जबकि 1946 में पाकिस्तान के मुस्लिम नेताओं जैसे—जिन्ना, फीरोज़ खाँ नून, पीर बक्स, राजा गजनफर अली आदि ने 15 अगस्त 1947 से पहले, सम्पूर्ण हिन्दू-मुस्लिम आबादी की अदला-बदली पर बल दिया। डा. भीमराव अम्बेडकर ने तो आबादी की अदला-बदली को सभी हिन्दू-मुस्लिम समस्याओं का हल बतलाया जिसका सरदार पटेल और डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी समर्थन किया। परन्तु हिन्दू विरोधी नेहरू ने इसे बलपूर्वक अस्वीकार कर दिया। अन्त में डा. मुखर्जी ने केबीनेट से इस्तीफा दे दिया।

सच्चाई यह है कि 1947 में हिन्दू मुस्लिम आबादी की अदला-बदली न करना विभाजन से भी बड़ी भूल थी। यह हिन्दू भारत के विरूद्ध एक षडयंत्र था जिसके फलस्वरूप कांग्रेस, भारत में बसे मुसलमानों के सहारे लम्बे समय तक राज कर सकें और बाद में इस अहसान के बदले शेष भारत को भी मुसलमानों को दे सकें। इतना ही नहीं जनसंख्या की अदला-बदली न करने के परिणामस्वरूप लाखों हिन्दू पाकिस्तान व बंग्लादेश में कत्ल कर दिए या इस्लाम में धर्मान्तरित कर लिए गए और आज तो वहाँ हिन्दू प्रभावहीन और न के बराबर रह गए हैं।

इस नर संहार के लिए केवल गांधी, नेहरू और कांग्रेस पूर्णतया उत्तरदायी हैं। आज पाकिस्तान में जो हिन्दुओं की दुर्गति हो रही है और शेष भारत के पुनः विभाजन की आशंका दिखाई दे रही है, उसके लिए कांग्रेस पूरी तरह जिम्मेदार है। तत्कालीन हिन्दू नेताओं ने भी आबादी की अदला-बदली न करने का कोई विरोध नहीं किया, और न गांधी ने भी कोई आमरण अनशन ही किया जैसा कि इन्होंने पाकिस्तान को 55 करोड़ रूपए दिलवाने के लिये जनवरी 1948 में किया था।

चिंता की बात तो यह है कि जिस मुस्लिम परस्त गांधी-नेहरू-कांग्रेस ने भारत का विभाजन किया, वे ही 1947 से लगभग लगातार सत्ता में रहे हैं और शेष भारत के इस्लामीकरण के लिए अत्यन्त सक्रिय रहे हैं। उदाहरण के लिए भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू "संस्कृति से मुसलमान" और 'हिन्दुओं के कटु आलोचक थे।' वे हिन्दुओं पर आक्षेप

लगाते थे कि हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भारत को हिन्दू धर्म निष्ठ राज्य बनाना चाहते हैं (*गोराडिया और फंडा, ऐंटी हिन्दूज पृ. 97*)

अगला प्रधान मंत्री नेहरू की पुत्री इन्दिरा गांधी हुई जो मुस्लिम फ़ीरोज़ खां की मुस्लिम पत्नी थी जिन्होंने अपने-अपने नाम ही बदले, इस्लाम धर्म नहीं छोड़ा। (*भसीन, नेहरू-गांधी राजवंश और सोनिया गांधी पृ. 2*) राजीव गांधी को सोनिया से विवाह करने के लिए, मुसलमान से ईसाई बनना पड़ा और वर्तमान में कांग्रेस अध्यक्ष एवं केन्द्रीय परामर्श दात्री कांउसिल की अध्यक्ष सोनिया गांधी सुपर कैबीनेट के साथ देश की भाग्यविधाता है। दुःख की बात है कि भारतीय नेताओं ने एक विदेशी मूल की महिला को देश का सर्वे सर्वा स्वीकार कर रखा है। क्या ऐसा किसी अन्य देश में सम्भव है ?

मुस्लिम नेता तो भारत विभाजन से पहले और बाद में भी शेष भारत को इस्लामी राज्य बनाना चाहते रहे हैं, देखिए प्रमाण—

1. हकीम अजमल खां ने कहा—*"एक और भारत और दूसरी ओर एशिया माइनर भावी इस्लामी संघ रूपी जंजीर की दो छोर की कड़ियाँ हैं जो धीरे-धीरे, किन्तु निश्चय ही, बीच के सभी देशों को एक विशाल संघ में जोड़ने जा रही है"* (*भाषण का अंश, खिलाफत कान्फ्रेस, अहमदाबाद, 1921, आई.ए.आर. 1992 पृ. 447*)।

2. एफ. ए. दुर्रानी ने कहा—*"भारत-सम्पूर्ण भारत, हमारी पैतृक सम्पत्ति है और उसका फिर से इस्लाम के लिए विजय करना नितांत आवश्यक है तथा पाकिस्तान का निर्माण इसलिए महत्त्वपूर्ण था कि उसका शिविर यानी पड़ाव बनाकर शेष भारत का इस्लामीकरण किया जा सके।"* (*पुरुषोत्तम, मुस्लिम राजनीतिक चिन्तन और आकांक्षाएँ, पृ. 51, 53*)

3. कांग्रेस नेता एवं भूतपूर्व शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आज़ाद ने तो पूरे भारत के इस्लामीकरण की वकालत करते हुए कहा : *"भारत जैसे देश को जो एक बार मुसलमानों के शासन में रह चुका है, कभी भी त्याग नहीं जा सकता और प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है कि उस खोई हुई मुस्लिम सत्ता को फिर से प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें।"* (*बी.आर.नन्दा, गांधी पैन इस्लामिज़्म, इम्पीरियलिज्म एण्ड नेशनलिज़्म, पृ. 117*)।

4. मौलाना मौदूदी का कथन है कि *"मुस्लिम भी भारत की स्वतंत्रता के उतने ही इच्छुक थे जितने की दूसरे लोग। किन्तु वह इसको एक साधन, एक पड़ाव मानते थे, ध्येय (मंजिल) नहीं। उनका ध्येय एक ऐसे राज्य की स्थापना का था जिसमें मुसलमानों को विदेशी अथवा अपने ही देश के गैर-मुस्लिमों की प्रजा बनकर रहना न पड़े। शासन दारूल-इस्लाम (शरीयः शासन) की कल्पना के, जितना सम्भव हो, निकट हो। मुस्लिम, भारत सरकार में, भारतीय होने के नाते नहीं, मुस्लिम हैसियत से भागीदार हों।" (डॉ. तारा चन्द, हिस्ट्री ऑफ दी फ्रीडम मूवमेंट, खंड 4, पृ. 287)*

5. हामिद दलवई का मत है कि *'आज भी भारत के मुसलमानों और पाकिस्तान में भी प्रभावशाली गुट हैं, जिनकी अन्तिम मांग पूरे भारत का इस्लाम में धर्मान्तिरण है।' (मुस्लिम डिलेमा इन इंडिया, पृ. 35)*

6. बंगला देश के जहाँगीर खां ने *"बंगला देश, पाकिस्तान, कश्मीर तथा पश्चिमी बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब व हरियाणा के मुस्लिम बहुल कुछ भागों को मिलाकर मुग़लिस्थान नामक इस्लामी राष्ट्र बनाने का सपना संजोया है।" (मुसलमान रिसर्च इंस्टीटूट, जहाँगीर नगर, बंग्लादेश, 2000)।*

7. सॉउदी अरेबिया के प्रोफ़ेसर नासिर बिन सुलेमान उल उमर का कथन है कि *"भारत स्वयं टूट रहा है। यहाँ इस्लाम तेज़ गति से बढ़ रहा है और हजारों मुसलमान, पुलिस, सेना और राज्य शासन व्यवस्था में घुस चुके हैं और भारत में इस्लाम सबसे बड़ा दूसरा धर्म है। आज भारत भी विध्वंस के कग़ार पर है। जिस प्रकार किसी राष्ट्र को उठने में दसियों वर्ष लगते हैं उसी प्रकार उसके ध्वंस होने में भी लगते हैं। भारत एक दम रातों-रात समाप्त नहीं होगा। इसे धीरे-धीरे समाप्त किया जाएगा निश्चय ही भारत नष्ट कर दिया जाएगा।" (आर्गे, 18.7.04)*। इसीलिए मुस्लिम *धार्मिक नेता मौलादा वहीदुद्दीन ने 1996 में सुझाव दिया कि "मुसलमानों को कांग्रेस में शामिल हो जाना चाहिए और आगे चलकर उनमें से एक निश्चय ही भारत का प्रधानमंत्री हो जाएगा।" (हिन्दु. टा. 25.1.96)*

पाकिस्तानी जिहादियों का उद्देश्य भी मार्च 1940 का अधूरा कार्यक्रम पूरा करना है यानी 'पहले कश्मीर और फिर शेष भारत को इस्लामी राज्य बनाना।' इसके लिए न केवल जिहादी संगठनों, बल्कि आई.एस.आई.

आई और पाकिस्तानी सेना का भी समर्थन है क्योंकि भूतपूर्व राष्ट्रपति जियाउल हक ने *"पाकिस्तानी सेना को 'अल्लाह के लिए जिहाद' (जिहाद फी सबीलिल्लाह) का 'मोटो' या आदर्श वाक्य दिया।"* (*सरीन, पृ. 321*)

इसी प्रकार मरकज दवातवल इरशाद के अमीर हाफिज़ मुहम्मद सईद ने कहा : "कश्मीर को भारत से मुक्त कराने के बाद लश्करे तायबा वहीं नहीं रूकेगा बल्कि भारतीय मुसलमानों, जिन पर हिन्दुओं द्वारा अत्याचार हो रहे हैं, के सहयोग से आगे जाएगा और उन्हें बचाएगा। कश्मीर तो, असली लक्ष्य भारत तक पहुँचने का, दरवाज़ा है।" (*नेशन 4.11.1998*) उन्होंने 7.11.1998 को '*पाकिस्तान टाइम्स*' में लिखा : *"आखिर में लश्करे टाइबा दिल्ली, तेल अवीब (इज़राइल) और वाशिंगटन के ऊपर झंडा फहराएगा।"* उन्होंने 27 नवम्बर 1998 को 'फ्राइडे टाइम्स' में लिखा : मुस्लिम समाज की सभी समस्याओं का हल ज़िहाद है क्योंकि सभी इस्लाम विरोधी ताकतें मुसलमानों के विरूद्ध जुट गई हैं। मुजाहिद्दीन, भारतीय क्रूरताओं, जो कि निपराधी कश्मीरियों को भयभीत कर रहे है, के विरूद्ध ज़िहाद कर रहे हैं। लश्कर के मुजाहिद्दीन, विश्वभर की आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसी लहजे में उन्होंने 18.08.2004 को 'निदा ए मिल्लत' में लिखा *"वास्तव में पाकिस्तान तो इस महाद्वीप के मुसलमानों के लिए एक देश है। इसीलिए यह कश्मीर बिना अधूरा है। पाकिस्तान भी हैदराबाद, जूनागढ़ और मुम्बई (महाराष्ट्र) बिना अधूरा है क्योंकि इन राज्यों ने (1947 में) पाकिस्तान में विलय की घोषणा की थी। लेकिन हिन्दुओं ने उन्हें अपने अधीन कर लिया। इसीलिए हमारा यह कर्त्तव्य है कि उन्हें हिन्दुओं के कब्जे से मुक्त कराएें, और उनकी मुस्लिम आबादी को यह आश्वासन दिया जाएगा कि वे पाकिस्तान के एक हिस्सा हो जाऐंगे। पाकिस्तान के पूर्ण होने के लिए हमारा यह लक्ष्य है। हम भारत में वाणी और कलम से यह उद्देश्य प्रचारित करते रहेंगे और जिहाद द्वारा उन राज्यों को वापिस लेंगे।"* (*एस. सरीन. दी जिहाद फैक्ट्री, पृ. 312*) शायद इसीलिए पाकिस्तानी जिहादियों ने 26.11.2008 को बम्बई पर हमला किया। साथ ही यह ऐतिहासिक सत्य है कि 1947 से पहले सभी राज्यों ने स्वेच्छा से भारत में विलय किया था।

जैशे मुहम्मद के अध्यक्ष मौलाना मसूद अज़हर, जिन्हें 2000 में हवाई जहाज में बन्धक बनाए 160 यात्रियों के बदले छोड़ा गया था, ने कंधार में हज़ारों लोगों की उपस्थिति में कहा *"भारतीयों और उनको बतलाओ, जिन्होंने मुसलमानों को सताया हुआ है, कि मुजाहिद्दीन अल्लाह की सेना है और वे जल्दी ही इस दुनिया पर इस्लाम का झंडा फहराऐंगें। मैं यहाँ केवल इसलिए आया हूँ कि मुझे और साथी चाहिए। मुझे मुजाहिद्दीनों की जरूरत है जो कि कश्मीर की मुक्ति के लिए लड़ सकें। मैं तब तक शान्ति से नहीं बैंठूगा जब तक कि मुसलमान मुक्त नहीं हो जाते। इसलिए (ओ युवको) **ज़िहाद के लिए शादी करो, ज़िहाद के लिए बच्चे पैदा करो और केवल ज़िहाद के लिए धन कमाओ जब तक कि अमरीका और भारत की क्रूरता समाप्त नहीं हो जाती। लेकिन पहले भारत।**"* (न्यूज, 8.1.2000)

भारत को इस्लामी राज्य बनाने की योजनाएँ

मुसलमानों ने शेष भारत को इस्लामी राज्य बनाने की अनेक दीर्घ एवं अल्पकालीन योजनाएँ चला रखी हैं। दीर्घकालीन प्रमुख योजनाएँ हैं–(1) बंग्लादेशी मुस्लिमों को घुसपैठ द्वारा पूर्वोत्तर भारत का इस्लामीकरण; (2) कश्मीर को हिन्दूविहीन कर स्वतन्त्र मुस्लिम देश बनाना; (3) बंग्लादेश के जहागीर खाँ की सन् 2000 ई. की योजनानुसार बंग्लादेश और पाकिस्तान के मध्य के भारतीय क्षेत्र एवं कश्मीर को मिलाकर मुगलिस्तान का निर्माण करना; (4) भारत के लगभग एक सौ से अधिक मुस्लिम बहुल-जिलों को इस्लामी अलगाववादी गतिविधियों का केन्द्र बनाना और (5) कुछ मुस्लिम-बहुत क्षेत्रों में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से सम्बन्धित विशेष मुस्लिम शिक्षण केन्द्र स्थापित करना आदि जो कि, अलीगढ़ विश्वविद्यालय की भाँति, देश के इस्लामीकरण में सहायक हो सकें।

अल्पकालीन योजनाओं में मुसलमानों की सरकार से प्रमुख माँगे हैं–(1) मुस्लिमों को पिछड़े, पीड़ित एवं बेरोजगार कहकर उनके विकास के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहायता, (2) सरकारी नौकरियों में आरक्षण, (3) सस्ती ब्याज दरों पर रोज़गार-ऋण, (4) पुलिस, सेना व अर्द्धसैनिक बलों में नौकरियाँ, (5) हज्ज यात्रा के लिए आर्थिक सहायता एवं हज्ज हाउसों का निर्माण, (6) स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. स्तर

तक शिक्षा के लिए मुसलमानों को (बिना टेस्ट) छात्रवृत्तियाँ, (7) मदरसों के आधुनिकीकरण के लिए अनुदान, (8) वक्फ बोर्डो को आर्थिक सहायता एवं (9) प्रचार माध्यमों में भारत के प्राचीन रक्त रंजित मुस्लिम इतिहास को उदार एवं मुसलमान हितकारी दृष्टिकोणों को उचित ठहराना आदि आदि।

मुसलमानों की उपरोक्त नीतियों का सामूहिक राजनैतिक एजेंडा एक ही होता है। इसके लिए सभी मुस्लिम सांसद (भाजपा के अलावा) और एसेम्बलियों के एम.एल.ए. चाहे वे किसी भी राजनैतिक दल से चुनकर क्यों न आए हों, संसद और एसेम्बली सत्र शुरू होने से पहले, राज्यों की परिस्थितियों के अनुसार, रणनीति तय करके सरकारों को उसे स्वीकृत करने पर बल देते हैं।

केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा भारत के इस्लामीकरण में योगदान

विभाजन के बाद, शेष भारत को भी इस्लामी राज्य बनाने की मुसलमानों की उपरोक्त योजनाओं को कांग्रेस सरकार द्वारा लागू करना तो उसी समय से प्रारम्भ हो गया था, जब गांधी-नेहरू-कांग्रेस ने 1947 में, भारत और पाकिस्तान की हिन्दू-मुस्लिम आबादी की अदला-बदली नहीं की और भारतीय मुसलमानों को जानबूझकर यहाँ ही बसाए रखा तथा उन्हें सभी प्रकार के संवैधानिक आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक विशेष अधिकार तथा भारत को सैक्यूलर राज्य बनाए जाने का आश्वासन दिया और 1947 से ही कांग्रेस आदि सैक्यूलर सरकारें मुसलमानों को विशेषाधिकार दे रहीं हैं ताकि वे सम्पूर्ण भारत में, इस्लामी राज्य स्थापित होने तक, उनकी सहायता से राज्य करते रहें।

इतिहास साक्षी है कि 1947 से ही कांग्रेस सहित लगभग सभी राजनैतिक पार्टियों की सरकारों ने मुसलमानों के एक थोक वोट पाने के लिए, भारत के इस्लामीकरण में पूरी ईमानदारी से उनकी शर्तों के सामने आत्म समर्पण किया और वे सभी प्रकार की संवैधानिक और यहाँ तक कि असंवैधानिक राजनैतिक व धार्मिक विशेष सुविधाऐं देती आ रहीं हैं। देखिए कुछ प्रमाण-

1. धार्मिक सुविधाऐं—विश्व के सभी इस्लामी देशों में से कहीं भी मुसलमानों को हज्ज यात्रा के लिए आर्थिक सहायता नहीं दी जाती है क्योंकि हज्ज के लिए आर्थिक सहायता लेना गैर-इस्लामी है (कु. 39.9)। परन्तु भारत सरकार प्रत्येक हज्ज यात्री को हवाई यात्रा के लिए 28000 रूपये की आर्थिक सहायता देती है। हाजियों के लिए अनेक राज्यों में हज्ज हाऊस बनाए गये हैं। इतना ही नहीं, जिद्दा में हाजियों की सुविधाएँ देखने के लिए 2005-09 तक 26-51 लोगों का एक विशेष दल गया, मानो इसके लिए वहाँ की एम्बेसी काफ़ी नहीं है। जिस पर 8 से 18 लाख प्रतिव्यक्ति खर्च आया।

2. वक्फ बोर्ड—मुस्लिम वक्फ बोर्ड के पास बारह लाख करोड़ की सम्पत्ति है जिसकी वार्षिक आय 12000 करोड़ है। फिर भी सरकार वक्फ बोर्डोंको आर्थिक सहायता देती है।

3. मदरसा—सरकार ने धार्मिक कट्टरवाद एवं अलगाववाद को बढ़ावा देने वाली मदरसा शिक्षा को न केवल दोष मुक्त बताया बल्कि उसके आधुनिकीकरण के नाम पर प्रति वर्ष करोड़ों रूपए आर्थिक सहायता देती है। फिर भी मुसलमान इन मदरसों को केन्द्रीय मदरसा बोर्ड से जुड़ने देना नहीं चाहते। यहाँ तक कि पाठ्यक्रम में सुझाव व अन्य किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं मानते। (1) पश्चिमी बंगाल सरकार ने 2010 तक 300 अंग्रेजी माध्यम के मदरसा स्थापित करने का निर्णय लिया है। (*पायो. 23. 12.2009*); (2) सरकार ने अल्पसंख्यकों के संस्थानों जैसे जामिया मिलिया को उच्च शिक्षा में ओबीसी विद्यार्थियों तक के लिए आरक्षण से मुक्त रखा। इसे अल्पसंख्यक संस्था (3) इलाहाबाद हाई कोर्ट के विरोध के बावजूद, अलीगढ़ विश्व विद्यालय को अल्पसंख्यक स्वरूप बनाए रखने पर बल दिया। (4) अल्पसंख्यकों के कक्षा एक से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए पच्चीस लाख वज़ीफे दिए जबकि ये सवर्णों को नहीं हैं। (5) केरल सरकार ने मदरसों के मौलवियो के लिए पेंशन देने का निर्णय किया है। (6) बिहार में 10वीं की परीक्षा पास करने वाले प्रत्येक मुस्लिम छात्र को 10,000/ रुपये पुरस्कार मिलेगा। (7) राजस्थान में मुस्लिम विद्यार्थी निजी विद्यालयों में पढ़ते समय भी छात्रवृत्ति ले सकते हैं। (*शिक्षा बचाओ आन्दोलन, बुले. 48 पृ. 32*) (8) 'फातिमी समिति' की सिफारिशों के अनुरूप 1 से 12 कक्षा तक की पुस्तकें उर्दू में तैयार होंगी। अध्यापक

प्रशिक्षण कार्यक्रम भी उर्दू में संचालित करने की योजना हैं (*राजस्थान पत्रिका 9.9.2007*)। (9) पाठ्य-पुस्तकों में पिछली (1998-2003) सरकार द्वारा निकाले गए हिन्दू विरोधी और मुस्लिम-उन्मुख अंशों को दुबारा पुस्तकों में डाल दिया गया। (10) सरकार ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पाँच क्षेत्रीय केन्द्र, भोपाल, पुरी, किशनगंज (बिहार), मुर्शिदाबाद (पं. बंगाल) व मुल्लूपुरम (केरल) में खोलने के लिए दो हजार करोड़ का अनुदान दिया। (*वही. बुल. 48, पृ. 31*) (11) अल्पसंख्यकों के एम.फिल और पी.एच.डी. करने वाले 756 विद्यार्थियों को राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा या राज्य स्तरीय पात्रता परीक्षा के बिना बारह से चौदह हजार रूपये महीना रिसर्च फैलोशिप मिलेगी। (*दैनिक जाग. 23.12.2009*) जबकि अन्यों को सरकारी रिचर्स फैलोशिप पाने के लिए ये परीक्षाएँ पास करना अनिवार्य है। (12) उच्च प्रोफेशनल कोर्सो को पढ़ने वाले अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की फीस सरकार देगी। (13) स्पर्धा वाली सरकारी परीक्षाओं के कोचिंग के लिए फीस भी सरकार देगी। ये सुविधाएँ सामान्य नागरिकों को नहीं है।

4. राजनैतिक—(1) अल्पसंख्यकों के नाम पर, विशेषकर मुसलमानों के लिए, एक अलग मंत्रालय बनाया गया और उनके लिए 11वीं पंचवर्षीय योजना में 15 प्रतिशत बजट रखा गया। (2) 2004 में सत्ता में आते ही कांग्रेस ने आतंकवाद में फंसे मुसलमानों को बचाने के लिए 'पोटा कानून' निरस्त कर दिया जिसके फलस्वरूप देश में आतंकवाद बढ़ रहा है। (3) मुस्लिम पर्सनल कानूनों और शरियत कोर्टों का समर्थन किया; (4) 13 दिसम्बर 2001 में संसद पर हमले के दोषी अफजलखां को फांसी की सजा आज तक लटकी हुई है। (5) 17 दिसम्बर 2006 को 'नेशनल डवलपमेंट काउंसिल' की मीटिंग में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने तो यहाँ तक कह दिया कि *"भारतीय संसाधनों पर पहला अधिकार मुसलमानों का है।"* शायद इसलिए उन्हें रोजगार, ऋण, शिक्षा आदि में विशेष सुविधाऐं दी जा रहीं हैं। सरकार बंगला देशी मुस्लिम घुसपैठियों को निकालने में उत्साह हीन है जब कि वे भारत के इस्लामीकरण के लिए यहाँ बस रहे हैं।

5. आर्थिक—(1) सच्चर कमेटी द्वारा मुस्लिमों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए 5460 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया; (2) उनके लिए सस्ती ब्याज दर पर ऋण देने के लिए एक कारपोरेशन बनाया गया;

(3) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को रिजर्व बैंक ने आदेश दिया कि वे अल्पसंख्यकों को ऋण देने में उदारता बरतें। इस अभियान की निगरानी के लिए एक 'मौनीटरिंग कमेटी' काम करेगी। (*दैनिक नव ज्योति, 4.1. 2006*)। (4) अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को 'माइनोरिटी डवलपमेंट एण्ड फाइनेंस कारपो' 0 से 3 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण दिया जाता है। (5) पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा प्रत्येक विभाग के बजट में से 30 प्रतिशत आवंटन मुसलमानों के लिए किया गया (*वही. बु. 48 पृ. 32*)। (6) 13 अगस्त 2006 को सरकार ने लोक सभा में बतलाया कि मुस्लिम प्रभाव वाले 90 जिलों और 338 शहरों में मुसलमानों के लिए विशेष विकास फण्ड का प्रावधान किया गया है। (वही, बु.48ए पृ.33)।

यहाँ विचारणीय प्रश्न यह है कि जब भारतीय मुसलमान सरकारी नीतियों जैसे परिवार नियोजन, समान आचार संहिता, वन्दे मातरम् गान आदि को नहीं मानते, उल्टे मुस्लिम पर्सनल कानून, शरियाह कोर्ट, इस्लामी बैंक आदि पर बल देते हैं, भारत में अलगाववाद एवं विदेशी आंतकवाद में हर सम्भव उपाय से सहयोग देते हैं, शाहबानो मामले में तो सभी दलों से चुनकर आए मुस्लिम सांसदों ने तो सुप्रीम कोर्ट का फैसला ही नहीं माना और तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को संविधान तक में परिवर्तन करने को विवश किया और संविधान बदला गया, तो ऐसे में भारत की सेक्यूलर सरकारों को धर्म के आधार पर, मुसलमानों को किसी प्रकार के विशेष अधिकार देने का क्या कोई औचित्य ही रह जाता है ? साथ ही जब समस्त भारतीय मुसलमानों को उनकी मांगानुसार पाकिस्तान मिल गया, तो उनका 1947 के बाद भारत में बसे रहना अैर कांग्रेस का उन्हें भारत में बसाए रखना दोनों ही पूर्णतया अनुचित एवं अनैतिक है। साथ ही, तब मुसलमान भी पाकिस्तान जाने का विरोध नहीं कर पाते क्योंकि यह उनकी मांगानुसार था। ऐसे में भारतीय सरकारों द्वारा उनको कोई विशेषाधिकार देने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

इस संदर्भ में उच्चतम न्यायालय ने साविधान करते हुए, 18 अगस्त 2005 को कहा– ''*राजनैतिक या सामाजिक अधिकारों में कमी को आधार बनाकर भारतीय समाज में अल्पसंख्यक समूहों को निर्धारित करने और उसे मानने की प्रवृत्ति पांथिक हुई तो भारत जैसे बहुभाषी, बहुपांथिक देश*

में इसका कोई अन्त होने वाला नहीं। एक समुदाय द्वारा विशेधिकारों की मांग दूसरे समुदाय को ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करेगी जिससे परस्पर संघर्ष और झगड़े ही बढ़ेगे।'' परन्तु वोटों की लालची और सत्ता की प्यासी सैक्यूलर सरकारें इन चेतावनियों की परवाह नहीं करती हैं।

कैसे बनेगा भारत इस्लामी राज्य

यदि भारत की सैक्यूलर सरकारें, इसी प्रकार मुस्लिम तुष्टीकरण करती रहीं, एवं देशभक्त मूकदर्शक की तरह इन देश विरोधी गतिविधियों की अनदेखी करते रहे और हिन्दुओं की उपेक्षा को सहते रहे तो 2030 तक, यानी हिन्दुओं के 2060 तक में अल्पमत में होने से पहले ही, मुस्लिम जन संख्या विस्फोट और शांतिपूर्ण ज़िहाद द्वारा, भारत में इस्लामी राज्य स्थापित हो जाएगा, वह भी किसी सशस्त्र क्रान्ति व खून खराबे के बगैर। इसके निम्नलिखित कारण हैं–

(1) पिछले 63 वर्षों के चुनाव परिणामों के अनुभव बताते हैं कि सभी केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारों के लिए हुए चुनावों में अधिकतम वोटिंग, कुल का लगभग 50-60 प्रतिशत होता है जो कि प्रत्येक सीट के लिए खड़े अनेक उम्मीदवारों में बंट जाता है। परिणामस्वरूप कुल वोटों का 25 से लेकर 30 प्रतिशत वोट पाने वाला उम्मीदवार चुनावों में आसानी से सफल हो जाता है। क्योंकि इन चुनावों में न तो प्रत्येक वोटर को वोट डालना अनिवार्य होता है, और न ही चुनाव जीतने वाले के लिए बहुसंख्या (50 प्रतिशत से अधिक) में वोट पाना आवश्यक है जो कि किसी भी प्रजातांत्रीय व्यवस्था के लिए आवश्यक होना चाहिए। इसी नीति यानी अल्पसंख्यक (25-30 प्रतिशत) वोटों के सहारे कांग्रेस अभी तक देश में राज करती आई है। उसी नीति को अपनाकर मुसलमान भी सत्ता में आ जाएंगें यदि वे किसी प्रकार लगभग 250 सीटों के लिए पच्चीस प्रतिशत वोट सुनिश्चित कर सकें।

(2) मुसलमानों की जनसंख्या हिन्दुओं से करीब दोगुनी गति से बढ़ रही है। अतः 2030 तक यहाँ मुसलमानों की जन संख्या लगभग बीस प्रतिशत के करीब हो जाएगी।

(3) भारत के इस्लामीकरण के उद्देश्य से आए वर्तमान चार करोड़ बंगला देशी मुस्लिम घुसपैठियों, जिन्हें कि कांग्रेस व सेक्यूलर पार्टियाँ

भारत में बसाकर नियमित वोटर बना रही हैं, की संख्या तब तक बढ़कर छः करोड़ हो जाएगी।

(4) कांग्रेस अबतक जिन 25 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम आबादी वाले जिलों को विशेष सुविधाऐं दे रही हैं, वह अब आगे 15 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले जिलों को भी देगी (*दै.जा. 21.1.2011*)। तब तक ऐसे जिलों की संख्या 200 से अधिक हो जाएगी जो कि मिनी पाकिस्तान जैसे हो जाऐंगें।

(5) आज भी 15-20 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम आबादी वाले क्षेत्रों से केवल मुसलमान ही चुनकर आते हैं, चाहे वे किसी भी दल के क्यों न हों।

(6) इसके अलावा, मुसलमान कुछ जगहाँ, पर मजबूरी के कारण अन्य दलों से गठबन्धन कर 25 प्रतिशत वोट पाने की कूटनीति अपनाकर सफल होने का प्रयास करेंगे।

(7) कुछ जगहों पर तो अन्य दल स्वयं ही मुस्लिम नेताओं के पास गठबन्धन के लिए आऐंगे।

(8) यह भी सम्भावना है कि चुनाव जीतने एवं आवश्यक 20 प्रतिशत मुस्लिम वोटर संख्या जुटाने के लिए मुसलमान, भारत के अन्य मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से आकर कम मुस्लिम आबादी वाले क्षेत्रों में बस जाऐं। इसीलिए मुसलमान भारत में अनेक नए-नए मुस्लिम पोकेट बसा रहे हैं।

(9) आज भी बंगाल, केरल आदि क्षेत्रों में लम्बे समय तक, जो कम्युनिस्ट एवं कांग्रेस पार्टी का राज रहा है, उसमें 20 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम आबादी का होना ही बहुत बड़ा कारण रहा है।

(10) कुछ क्षेत्रों को तो मुसलमान 2030 तक मुस्लिम अधिसंख्यक (>50 प्रतिशत) तक बना लेंगे। केरल, जहाँ कि आज मुसलमानों की 24 प्रतिशत आबादी है, के मुख्यमंत्री वी.एस.अच्युतानन्दन ने 27.7.2010 को दिल्ली में स्वीकारा कि ''कट्टरपंथी मुसलमान अगले बीस सालों में केरल को मुस्लिम-बहुसंख्यक बनाना चाहते हैं जिसके लिए वे धन और विवाह द्वारा युवकों का धर्मान्तरण कर रहे हैं।''

(11) पिछले 63 वर्षों का इतिहास बताता है कि भारतीय मुसलमान अपने राजनैतिक हितों की पूर्ति के लिए, हमेशा के लिए, किसी एक ही पार्टी से जुड़े नहीं रहे, बल्कि राज्य की परिस्थिति के अनुसार विभिन्न

राजनैतिक पार्टियों जैसे कांग्रेस, सपा, बसपा, राजद, मार्किस्ट, भाजपा, टी. एम.सी. आदि से बारी-बारी से अपना गठ बन्धन बदलते रहे। इस प्रकार वे प्रत्येक पार्टी से अपना अधिकतम राजनैतिक लाभ उठाने के बाद दूसरे दल का दामन थामते रहे क्योंकि सभी दलों से आए मुसलमान सांसदों व एम.एल.ओं. का एक ही, सर्व सम्मत, राजनैतिक एजेंडा रहा है : **'भारत को इस्लामी राज्य बनाना।'**

(12) जब मुसलमान सभी सम्भव उपायों द्वारा अपनी जनसंख्या 20-25 प्रतिशत तक बढ़ालेंगे और राजनैतिक दृष्टि से शक्तिशाली हो जाऐंगें तो वे किसी भी राजनैतिक दल से न जुड़कर केवल अपने बल बूत पर केन्द्र व राज्यों में अपनी सरकारें बना लेंगे। वह भी शान्ति प्रिय ज़िहाद और भारतीय संवैधानिक तरीकों से 2030, तक ऐसा होने की पूरी सम्भावना है।

(13) इसके अलावा सभी सैक्यूलर पार्टियों के कर्त्ता-धर्ता प्रारम्भ से ही तथा-कथित हिन्दू ही रहे हैं। ये हिन्दू नेता अपने व्यक्तिगत स्वार्थों, द्वेष, अहंकार, क्षेत्रवादी व जातिवादी राजनीति के कारण सब कुछ देखते हुए भी इस इस्लामीकरण का विरोध नहीं कर रहे हैं। शायद वे यह सोचते हो क्योंकि भारतीय मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू ही थे, सो वे हिन्दू राष्ट्र की मुख्य धारा में जुड़ जायेगें। उनका ऐसा सोचना एक पूरा भ्रम है। यदि उन्हें राष्ट्र धारा से जुड़ना ही होता तो वे पहले पाकिस्तान की मांग, और फिर विभाजन के बाद भी, भारत में, क्यों बसे रहते ? क्या ये उपरोक्त कारण निकट भविष्य में भारत के इस्लामी राज्य होने के लिए पर्याप्त नहीं है ? **इन विभिन्न कारणों से यदि भारत अगले बीस सालों में इस्लामी राज्य हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होगा!**

एक बात और याद रखने योग्य है कि एक बार भारत में इस्लामी राज्य स्थापित हो जाने के बाद यहाँ न प्रजातंत्र रहेगा और न सैक्यूलरवाद। बल्कि धीरे-धीरे शरियाई कानून व्यवस्था हो जाएगी। जिस सैनिक अनुशासन और सुप्रीम कोर्ट की निष्पक्ष न्याय व्यवस्था के कारण आज देश में जो न्याय व सुरक्षा व्यवस्था है, इस्लामी राज्य हो जाने पर उनका प्रभाव भी समाप्त हो जाएगा। परिणामस्वरूप तब शेष भारत में भी हिन्दुओं की स्थिति, वर्तमान पाकिस्तान व बंगलादेश के हिन्दुओं जैसी हो जाएगी।

कुछ पाठकों को मेरी यह भविष्यवाणी काल्पनिक लगेगी परन्तु इस्लामी देशों में रहने का मेरा अनुभव एवं इस्लाम के 624 ए.डी.के बाद से पहले स्वयं अरेबिया में और बाद में भारत सहित विश्व में, इस्लामी जिहाद के जो प्रमाण (*भारत में जिहाद-जयदीपसेन*) हमें मिलते हैं उनसे मेरे कथनों व निष्कर्षों की पूरी पुष्टि होती है। सच्चाई यह है कि साम्राज्यवादी इस्लाम की कूटनीति, मानसिकता और विश्वव्यापी रक्तरंजित इस्लाम का इतिहास न जानना व उसकी अनदेखी करना ही भारतीयों को सबसे अधिक घातक सिद्ध हुआ है। हमारी सैक्यूलर सरकारें और मीडिया भी स्वार्थवश भारतीयों को इस इतिहास से अनजान बना रहें है।

मुस्लिम तुष्टीकरण आखिर क्यों ?

सबसे अधिक पीड़ा की बात तो यह है कि जिस भारत की स्वाधीनता व अखंडता के लिए हमारे पूर्वजों ने सैकड़ों वर्षों तक मुस्लिम आक्रमणकारियों से संघर्ष किया, लाखों योद्धाओं ने अपने प्राण न्यौछावर किए और भारत को इस्लामीकरण से बचाया, आज जिन नेताओं को देश की रक्षा का उत्तरदायित्व सौंपा गया है, वे ही स्वार्थवश, कुछ दिन राज करने के लिए भारत का मुसलमानों द्वारा इस्लामीकरण में निर्लज्जता के साथ सहयोग दे रहे हैं। मुस्लिम हितकारी कानून बना रहे हैं। वे उन करोड़ों देश भक्तों के साथ विश्वासघात कर रहे हैं जिन्होंने देश के लिए बलिदान किए। कांग्रेस एवं अन्य सैक्यूलर पार्टियों का मुस्लिमों के सामने आत्म समर्पण एवं वोट बैंक की राजनीति करना देश की भावी स्वाधीनता के लिए चिन्ता का विषय है। आज सारा देश सरकार की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण चिन्तित है। क्या देश की सेक्यूलर पार्टियों को दिखाई नहीं देता कि पाकिस्तान एवं भारत के मुसलमान शेष भारत में इस्लामी राज्य स्थापित करना चाहते हैं ?

कितने आश्चर्य की बात है कि जब सारा संसार इस्लामी आतंकवाद से लोहा लेने के लिए ठोस एवं प्रभावी रक्षात्मक कदम उठा रहे हैं, वहीं भारत की सत्ता लोलुप सरकारे इस्लामी कट्टरपंथी राजनैतिक शक्तियों के सामने आत्मसमर्पण कर रहीं हैं और स्वेच्छा से अपने देश को विश्व इस्लामी साम्राज्य का अंग बना रहीं हैं। विश्व इस्लामी आतंकवाद पर

नवीनतम शोध रिपोर्ट बता रहे हैं कि आज भारत ही इस्लामी आंतकवाद का सबसे बड़ा शिकार है। हमारे नेता सब देशों के सामने भारत में जिहादी आतंकवाद को समाप्त करने का रोना तो रोते हैं और उनसें आतंकवाद समाप्त करने में सहयोग भी मांगते हैं परन्तु स्वयं इस राष्ट्र विरोधी आतंकवाद के विरूद्ध कुछ ठोस कदम उठाने का साहस नहीं करते है। क्योंकि सभी जिहादी आतंकवादी मुसलमान ही हैं जिनके वोटों की वैसाखियों के सहारे वे सत्ता में हैं। उन्हें नागरिकों की सुरक्षा के उत्तरदायित्व को निभाने की अपेक्षा किसी भी प्रकार से सत्ता में बना रहना अधिक प्रिय है। क्या ऐसी स्वार्थी सैक्कुलरवादी सरकारों का देशवासियों के साथ विश्वासघात नहीं हैं ? **अतः ऐसी स्वार्थी व देश विरोधी सरकारों को सत्ता से हटा देना ही उपरोक्त सभी समस्याओं के समाधान का सबसे सरल व एक मात्र उपाय है।**

फिर क्या करें ?

वर्तमान में, हमारी सभी समस्याओं का समाधान महाभारत के इन शब्दों में है, जिन्हें हमने भुला दिया : **सर्वे धर्माः राजधर्मप्रधानाः। सर्वेवर्णाः पाल्यमानाभवन्ति। सर्वा विद्या राजधर्मेषु युक्ताः। सर्वे लोकाः राजधर्मेषु प्रविष्टाः।** (*शान्ति प. 63 : 27, 29*) अर्थात् 'सब धर्मों से राजधर्म सबसे श्रेष्ठ है। इसी से सब वर्णों की पालना होती है। राजधर्म में सम्पूर्ण विद्याएँ निहित होती हैं और राजधर्म में सारे लोकों का समावेश है।' यानी राज्यसत्ता पाना और उसे पक्षपातरहित, न्यायपूर्वक, समतावादी व्यवस्थानुसार लोक कल्याण के लिए चलाना ही राजधर्म है। हमारे राजधर्म का आधार सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। उसके स्थापित होने पर ही राष्ट्रीय सुरक्षा हो सकेगी और उसी के आश्रय में व्यक्ति अपने सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्यों का पालन कर सकेगा, अन्यथा नहीं।

यही बात ऋग्वेद के **स्वराज्य सूत्र** में कही गई है कि–

प्रेह्यभीहि घृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते। इन्द्रनृम्णं हि ते।
शवो हनो वृत्रं जय अपो%र्चत्रनु स्वराज्यम्।। (ऋ0 1.80.4)

"हे वीर! आगे बढ़, शत्रु पर वार कर, उसे परास्त कर दे। तेरे शस्त्र को कोई नहीं रोक सकता। तुझमें शत्रु को झुका देने वाला बल विद्यमान है।

आततायी को मार दे। तेरी जिन प्रजाओं को शत्रु ने पकड़ रखा है उन्हें जीत ले और स्वराज्य का आराधक बन। अर्थात् हे मनुष्य! तुझमें असीम शक्ति है। इस आत्म विश्वास के साथ संघर्ष कर, विजय प्राप्त कर और अपने देश में स्वराज्य को सुरक्षित रख।''

अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते।
त्वष्टा चित्तव मन्यव इन्द्र वेवज्यिते भिया%चेत्रनु स्वराज्यम्।।

(ऋ0 1.80.14)

''बिजली की तरह गरजने वाले वीर! तेरे गर्जन को सुनकर स्थावर जँगम कांप उठेंगे। तेरे शौर्य को देखकर सूर्य तक भय से थर्रा उठेगा। तू सच्चा वीर है। **स्वराज्य का आराधक बन अर्थात् वैदिक राज्य के लिए संघर्ष कर।''**

अतः आज की परिस्थितियों में हमारी सबसे पहली आवश्यकता है कि भारतीय राष्ट्रभक्त पहले, वर्तमान चुनौतियों और उसके भावी परिणामों को समझें और फिर उन चुनौतियों से मुकाबला करने का संकल्प लें। तथा हम अपने सभी क्षेत्रीय, भाषायी, जातीय आदि भेद-भावों को भुलाकर भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आधार पर एक सुदृढ़ वोट बैंक तैयार करने का दृढ़ निश्चय करें। इसके लिए हम गाँवों से लेकर नगरों तक समय-सीमाबद्ध, संगठनात्मक, रचनात्मक एवं परिस्थिति अनुसार व्यावहारिक कार्यक्रम बनायें और उसे क्रियान्वित करने में जुट जायें। इस राष्ट्र-चेतना अभियान में प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकर्त्ता, बौद्धिक-वर्ग एवं व्यक्ति सभी अपनी समथ्योनुसार जुट जायें, जिसका एक मात्र लक्ष्य हो : *''भारतीय संस्कृति-आधारित राष्ट्रवादी सरकार का प्रान्तों एवं केन्द्र में गठन।''* इस राष्ट्र-रक्षा अभियान में प्रत्येक राष्ट्रभक्त की सहभागिता सबसे बड़ी राष्ट्र-सेवा है। **आज यह राष्ट्र-भक्ति ही ईश्वर-भक्ति है एवं स्वराष्ट्र-रक्षा ही सच्ची ईश्वर-पूजा है।**

इस्लामिस्तान

महात्मा रामचन्द्रवीर एवं स्वामी धर्मेन्द्र महाराज

बनवा लिया मुसलमानों ने मार-काट कर पाकिस्तान।
सत्तालोलूप बनवा देंगे, भारत को इस्लामिस्तान।।1।।

मुस्लिम बहुसंख्या के कारण, सिन्ध, पंचनद एवं बंग।
शेष देश से पृथक् हो गये, भंग हुए जननी के अंग।।
गान्धी बापू रहे देखते, कटते रहे हिन्दुजन हाय!
लुटती रहीं बेटियाँ-बहनें, यवनों के हाथों निरूपाय।।
फिर भी नहीं मुसलमानों से, मुक्त हो सका हिन्दुस्तान।
गान्धीवादी बनवा देंगे, भारत को इस्लामिस्तान।।2।।

हिन्दू राजा श्री हरिसिंह ने, विलय किया भारत में राज्य।
किन्तु समझते रहे जवाहर, उनको अछूत अथवा त्याज्य।।
नेहरू की दुर्मति के कारण, हुआ विवादस्पद कश्मीर।
हुए पलायित वेवश पण्डित, जमे रहे मुल्ले अरू मीर।।
नित्य जताता है घाटी पर, अपना दावा पाकिस्तान।
नेहरू पन्थी बनवा देंगे, भारत को इस्लामिस्तान।।3।।

तीन कोटि को रोक लिया था, बापू ने दे प्यार-दुलार।
पहुँच रही है उनकी संख्या सम्प्रति बीस कोटि के पार।।
वोट लोलुपों को आश्रय पा, पनप रहे हैं घर में नाग।
लगा रहे हैं वही देश में, जिहादी जुनून की आग।।
इनके बल पर ही सक्रिय हैं, बर्बर आतंकी शैतान।
सत्ता लोलुप बनवा देंगे, भारत को इस्लामिस्तान।।4।।

मुस्लिम तुष्टिकरण देश हित, आज बन गया है अभिशाप।
सभी दलों में क्रमशः अब यह, पनप रहा है भीषण पाप।।
पाकिस्तान-परस्तों की सब, करते नित्य नई मनुहार।
पर अपने ही घर में हिन्दू, विवश जी रहे हैं मन मार।।
देशभक्त नागरिकों का यों, होता कहीं- नहीं अपमान।
मुस्लिमपरस्त बनवा देंगे, भारत को इस्लामिस्तान।।5।।



मेवात को 'पाकिस्तान' बनने से बचाओ

—अरुण कुमार सिंह

यूं तो समस्त भारत को इस्लामी राज्य बनाने की प्रक्रिया चल रही है किन्तु कुछ इलाकों में बड़ी तेजी से चल रही है। उनमें से एक है मेवात जिसका विस्तार से वर्णन यहाँ दिया गया है। नवम्बर 2012 की रिपोर्ट के आधार पर।

देश की राजधानी दिल्ली से मात्र 60 किलोमीटर की दूरी पर है मेवात। गुड़गाँव से अलवर के रास्ते आगे बढ़ने पर सोहना के बाद मेवात का इलाका शुरू हो जाता है। मेवात एक मुस्लिम-बहुल इलाका है। यहाँ मेव मुसलमानों का दबदबा है। मेव पहले हिन्दू ही थे। मेव एक जाति है। अभी भी कुछ मेव हिन्दू हैं। मेवात का इलाका हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में फैला है। 14वीं शताब्दी में तुग़लक वंश के समय मेवात के लोगों को जबरन मुस्लिम बनाया गया। फिर भी ये लोग वर्षों तक अपनी पहचान को बचाने में सफल रहे, किन्तु 1920 के बाद विशेष कर शरीयत एक्ट 1927 के बाद, मजहबी संगठनों ने इन लोगों को अपने रंग में रंगना शुरू कर दिया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि यहाँ के मुस्लिम पाकिस्तान की माँग का समर्थन करने लगे। पर जब पाकिस्तान बना तो यहाँ के बहुत कम मुस्लिम पाकिस्तान गए। लेकिन अब लगता है कि ये लोग मेवात को ही **'पाकिस्तान'** बनाने में लगे हैं। हरियाणा के मेवात क्षेत्र में चल रही गतिविधियों की पड़ताल से यही बात सामने आती है।

हरियाणा के मेवात क्षेत्र को, कट्टरवादियों ने बहुत पहले ही 'बंगलादेश' बना दिया है। बंगलादेश में करीब 8 प्रतिशत हिन्दू रह गए हैं, यही स्थिति मेवात की भी हो गई है। जबकि 1947 में बांग्लादेश में करीब 30 प्रतिशत और मेवात में भी लगभग 30 प्रतिशत हिन्दू थे। अब पूरे मेवात को 'पाकिस्तान' की शक्ल देने का प्रयास तेजी से हो रहा है। आज हरियाणा के मेवात में हिन्दुओं के साथ वह सब हो रहा है जो बांग्लादेश या पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ होता है। **हिन्दू लड़कियों और महिलाओं का अपहरण, उनका**

मतान्तरण और फिर किसी मुस्लिम के साथ जबरन निकाह। हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाना। हिन्दू व्यापारियों से जबरन पैसे की वसूली करना। मन्दिरों और श्मशान के भूखंडों पर कब्जा करना। बंगलादेशी घुसपैठियों को बसाना। हिन्दुओं को झूठे मुकदमों में फंसाना। हिन्दुओं के यहाँ डाका डालना। कोढ़ में खाज यह कि प्रशासन द्वारा भी हिन्दुओं की उपेक्षा आम बात हो गयी है। इस कारण मेवात के हिन्दू मेवात से पलायन कर रहे हैं। **मेवात के सभी 508 गाँव लगभग हिन्दू-विहीन हो चुके हैं।** किसी-किसी गाँव में हिन्दुओं के दो-चार परिवार ही रह गए हैं। यदि सेकुलर सरकारों का रवैया नहीं बदला तो यहाँ बचे हिन्दू भी पलायन कर जाएंगे। फिर इस इलाके को पाकिस्तान बनने से कोई रोक नहीं सकता है।

हिन्दुओं की प्रताड़ना

मेवात पहले गुड़गाँव जिले का भाग था। 4 मई 2004 को मेवात को जिला बनाया गया और नूंह को जिला मुख्यालय का दर्जा दिया गया। मेवात जिले का क्षेत्रफल 1784 वर्ग किलोमीटर है। मेवात जिले में कुल छह प्रखंड हैं-पुन्हाना, फिरोजपुर झिटका, नगीना, नूंह, तावडू और हथीन। इन कस्बाई नगरों में ही हिन्दू रह रहे हैं। जो हिन्दू सम्पन्न थे, वे गुड़गाँव, दिल्ली आदि शहरों में बस चुके हैं। जो बेचारे हिन्दू किसी कस्बे में भी घर नहीं ले सकते वे मजबूरवश अपने गाँवों में ही रह रहे हैं, लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है।

नूंह के एक गाँव मढ़ी के पूर्व सरपंच **रामजी लाल** ने बताया 'उनके गाँव में कुछ वर्ष पहले तक 25 घर हिन्दू थे। अब सिर्फ चार घर रह गए हैं। वे लोग दांतों के बीच जीभ की तरह रह रहे हैं। वे लोग निहायत ही गरीब हैं। यदि वे भी कहीं हिन्दू कस्बे में घर खरीद पाते तो गाँव में बिलकुल नहीं रहते। **मुस्लिमों ने उनके खेतों पर कब्जा कर लिया है। उनकी बहू-बेटियों को उठा ले जाते हैं।**' बता दें कि रामजी लाल भी पिछले चार साल से नूंह में रह रहे हैं। जब वे सरपंच थे तो उन्होंने गाँव के मुस्लिमों के दबाव पर कोई

गलत काम नहीं किया। इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ रहा है। आये दिन उन्हें जान से मारने की धमकी मिलने लगी। मजबूरन उन्हें अपनी जमीन और घर बहुत ही कम कीमत पर बेचकर भागना पड़ा।

अन्तरराष्ट्रीय साज़िश

जैन समाज, नूंह के अध्यक्ष और पेशे से वकील विपिन कुमार जैन मेवात में हिन्दुओं की दशा से बहुत दुखी हैं। उन्होंने बताया कि 'पूरे मेवात से हिन्दुओं को भगाने के लिए मानों अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साजिश रची जा रही है। यहाँ के हिन्दुओं को आतंकित करने के लिए रोज़ाना कुछ न कुछ किया जाता है। छोटी-छोटी बात पर आये दिन हिन्दुओं को प्रताड़ित किया जाता है। लव जिहाद के द्वारा हिन्दू लड़कियों को मुस्लिम बनाया जा रहा हैं 25 मई 2012 को मेवली गाँव के एक अग्रवाल परिवार की लड़की का अपहरण किया गया और उसका निकाह एक मुस्लिम से करा दिया गया, जबकि वह मुस्लिम दो बच्चों का बाप है। हिन्दुओं की कहीं कोई सुनवाई नहीं होती। मेवात में सरकारी योजनाओं में भी हिन्दुओं के साथ भेदभाव किया जाता है। एक सरकारी संस्था है मेवात विकास एजेंसी (एमडीए)। इसका वार्षिक बजट 70 करोड़ रु. है। इसका इस्तेमाल करीब-करीब मुसलमानों के लिए ही किया जाता है। मेवात में एक जूनियर बेसिक टीचर ट्रेनिंग स्कूल है। कुल 50 सीटें हैं, पर 25 सीटें मुसलमानों के लिए सुरक्षित कर दी गयी हैं।'

शर्म की बात

नगीना के रहने वाले वीर सिंह ने अपने समधी ओमवीर (गाँव-भिमसिका, तहसील-हथीन) के साथ हो रहे दुर्व्यवहार के बारे में जो बताया वह पूरे हिन्दू समाज के लिए शर्म की बात है। वीर सिंह के अनुसार 'ओमवीर को कुछ दिन पहले ही तब्लीगी जमात ने बहला-फुसलाकर मुसलमान बना लिया था और बाहर भेज दिया था, किन्तु चार महीने बाद ही उन्हें माजरा समझ में आ गया। वे वापस आ गए और एक हिन्दू के ही रूप में रहने लगे। इसके बाद उन्हें जान से मारने की धमकी मिलने लगी। जान बचाने के लिए वे अभी भी गाँव से बाहर छिप कर रहते हैं। इधर गाँवे में उनकी पत्नी और बच्चों को लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है। उनके बेटे पर कुरान फाड़ने का आरोप लगाया

गया, जो बाद में गलत निकला। इसी बीच उनकी लड़की के साथ मेरे बेटे की शादी तय हुई और हम लोग 27 जुलाई 2012 को बारात लेकर उनके घर पहुँचे। इतने में वहाँ उस गाँव के मुसलमान पहुँच गये और कहने लगे कि यह शादी नहीं हो सकती है, क्योंकि लड़की के पिता ने इस्लाम कबूल कर लिया है। इसलिए इस लड़की का किसी मुसलमान के साथ ही निकाह होगा। किन्तु लड़की की माँ उनकी सारी बातों को नकारती रही और अंत में पुलिस की देखरेख में शादी हुई।'

हिन्दुओं का बहिष्कार

एक ओर तो किसी हिन्दू लड़की का जबरन किसी मुस्लिम पुरुष से निकाह करा दिया जाता है, तो दूसरी ओर यदि कोई हिन्दू लड़का किसी मुस्लिम लड़की से प्यार करता है तो उसे मुसलमान बनना पड़ता है। ऐसा न होने पर पूरा मुस्लिम समाज हिन्दुओं पर टूट पड़ता है। अभी पिछले अप्रैल माह की ही बात है। नगीना निवासी भारत भूषण का इकलौता पुत्र विशाल जैन एक मुस्लिम लड़की के चक्कर में आ गया। वसीम अहमद बनकर उसने उस लड़की से निकाह कर लिया और अब वह बल्लभगढ़ में रहता है। विशाल मुस्लिम बन गया फिर भी वहाँ मुसलमानों ने विशाल के पिता को धमकाना शुरू कर दिया। जान बचाने के लिए घर-द्वार बेचकर वे अब फरीदाबाद में रहते हैं। उसी घटना को लेकर खुलेआम नगीना के शेष हिन्दुओं को भी धमकी दी गयी कि बदले में एक हिन्दू लड़की उठाई जाएगी। इस कारण वहाँ के हिन्दुओं ने काफी दिनों तक अपनी लड़कियों को पढ़ने के लिए स्कूल कालेज नहीं भेजा। मुस्लिमों ने यह भी फतवा दिया कि **कोई भी मुस्लिम किसी हिन्दू दुकानदार से कोई सामान नहीं खरीदेगा। हिन्दुओं की दुकानों के बाहर मुस्लिम चौकीदार बैठा दिए गए।** उनको यह काम दिया गया कि यदि कोई मुस्लिम किसी हिन्दू दुकानदार से सामान खरीदता पाया जाय तो उसे पकड़ा जाय। हिन्दुओं का बहिष्कार काफी दिनों तक चला।

मेवात के हिन्दुओं का कहना है कि हिन्दू दुकानदारों का आये दिन किसी न किसी बहाने बहिष्कार किया जाता है। इसके दो मुख्य उद्देश्य हैं-एक हिन्दुओं का भगाना और दूसरा, उधारी के पैसे को बेमानी करना।

मालूम हो कि यहाँ के मुसलमान हिन्दू दुकानदारों से उधार में सामान खरीदते हैं और जब पैसा अधिक हो जाता है तो उनका बहिष्कार कर देते हैं। हिन्दुओं का कहना है कि उधारी देना उनकी मजबूरी है। यदि उधार में सामान नहीं देंगे तो भी दिक्कत है।

श्मशान भूमि पर कब्जा

मेवात के ग्रामीण क्षेत्रों से हिन्दुओं के पलायन के बाद मन्दिरों की जमीन और श्मशान भूमि पर मुसलमानों ने कब्जा कर लिया है। इस कारण जो भी हिन्दू ग्रामीण क्षेत्रों में बचे हैं उन्हें बड़ी दिक्कत होती है। **किसी हिन्दू को अपने किसी मृत परिजन का अंतिम संस्कार किसी सड़क के किनारे करना पड़ता है।** उस दिन जब हम लोग बड़कली चौक से पिन्हवा जा रहे थे तो सड़क के किनारे कुछ लोग एक शव को अंतिम संस्कार करने की तैयारी कर रहे थे। भीड़ देखकर हम लोग रुके तो कुछ युवक पास आए। उनमें से एक युवक प्रेम ने बताया कि यह शव उनके चाचा बुध सिंह का है। सुबह ही एक सड़क हादसे में उनकी मौत हो गई थी। सड़क के किनारे अंतिम संस्कार क्यों कर रहे हो ? यह पूछने का प्रेम ने बताया कि श्मशान की जमीन पर आपपास के खेत वालों ने कब्जा कर लिया है। इस वजह से हम लोगों को बड़ी दिक्कत हो रही है। जिन लोगों ने कब्जा कर रखा है उनसे कुछ कहते हैं तो वे कहते हैं मुर्दा जलाना है तो कहीं भी जला लो। प्रेम ने यह भी बताया कि अब उसके गाँव अटेरना शमशाबाद में हिन्दुओं के सिर्फ तीन घर बचे हैं।

गोवंश की हत्या

स्थानीय लोगों ने बताया कि **पूरे मेवात में सूर्योदय से पहले ही सैकड़ों गोवंश की हत्या हो जाती है।** फिर उनके मांस को एक किलो, आधा किलों की थैलियों में बंद करके बेचा जाता है। मांस बेचने के लिए लोग गाँव-गाँव घूमते हैं। उनकी संख्या दूध बेचने वालों से अधिक होती है। यहाँ तस्करी से गोवंश लाया जाता है। मेवात भाजपा के पूर्व अध्यक्ष एवं भाजपा गो प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष **श्री भानीराम मंगला** कहते हैं, **'गो हत्यारों को मेवात के स्थानीय नेताओं का संरक्षण प्राप्त है। इसलिए उनके**

खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो पाती है। वोट की राजनीति ने मेवात की सभ्यता व संस्कृति को बदलकर रख दिया।'

मस्जिदों एवं मदरसों की बाढ़

पूरे मेवात में बड़ी संख्या में मस्जिदों और मदरसों का निर्माण हो रहा है। मुख्य सड़क के किनारे हर मोड़ पर मस्जिदें बन रही हैं और 8-10 गाँवों के बीच एक बड़ा मदरसा बन रहा है। कोई भी अपराध करके अपराधी सड़क के किनारे की मस्जिद में छिप जाते हैं। जो अपराधी मस्जिद में छिप जाता है, वह पुलिस की पकड़ से बाहर हो जाता है, क्योंकि पुलिस मस्जिद के अन्दर तलाशी लेने से बचती है। एकाध बार पुलिस ने ऐसा किया तो पुलिस पर मजहबी ग्रंथों के अपमान का आरोप लगाकर खूब हंगामा मचाया गया।

बसाए जा रहें हैं विदेशी

मेवात के कई हिस्सों में बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों और म्यांमार से भगाए गए रोहिंग्यायी मुस्लिमों को बसाया जा रहा है। इन्हें बसाने के लिए ग्राम पंचायतों की जमीन उपलब्ध कराई जा रही है। केनाल रेस्ट हाउस (यह एक स्थान का नाम है), पुन्हाना में तम्बू लगाकर इन मुस्लिमों को रखा जाता है। इसके बाद अन्य पंचायतों में उन्हें बसाया जा रहा है। सूत्रों का कहना है कि इन मुस्लिमों की मदद *'जमीयत उलेमा हिन्द'* के अलावा मेवात के अनेक मज़हबी संगठन, पंचायत प्रतिनिधि और विभिन्न राजनीतिक दलों के मुस्लिम नेता कर रहे हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि करीब 200 विदेशी मुस्लिम परिवारों को नूंह के रेवसन और फिरोजपुर झिरका के पास बसाया गया है। सूत्रों के अनुसार इन मुस्लिमों की मदद के लिए स्थानीय मुस्लिमों से पैसा वसूला जा रहा है। यह भी पता चला है कि इन मुस्लिमों के नाम मतदाता सूची में दर्ज कराने की कोशिश की जा रही है।

तब्लीगी जमात

मेवात के मुस्लिमों के कट्टरवाद घोलने का काम तब्लीगी जमातें कर रही हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि जमात के लोग गाँव-गाँव घूमते हैं और मुस्लिम युवाओं को 'जिहाद' और 'लव जिहाद' के लिए उकसाते हैं। साथ

ही हिन्दुओं को मुस्लिम बनाने का काम करते हैं। पिन्गवां के एक युवक ललित ने बताया कि करीब एक साल पहले मौलानाओं के भाषण से प्रभावित होकर वह मुस्लिम बन गया था और इस्लाम का प्रचार करने लगा था। किन्तु जल्दी ही उसे अपनी गलती का अहसास हुआ और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से पुनः हिन्दू हो गया। इस तरह की घटनाएँ मेवात में प्रायः रोज ही घटती हैं। मेवात के अधिकतर मुस्लिम युवा ट्रक चालक हैं। इस बहाने उन्हें पूरे भारत में जाने का मौका मिलता है। आए दिन ये युवा कहीं न कहीं से हिन्दू युवतियों को साथ ले जाते हैं। कुछ दिन मौज-मस्ती करते हैं फिर उन्हें आपस में ही बेच देते हैं। आर्य वेद प्रचार मंडल मेवात के संरक्षक **श्री पदमचंद आर्य** ने बताया कि ऐसी अनेक युवतियों को हमारे कार्यकत्ताओं ने जान हथेली पर रखकर मुस्लिमों में छुड़ाया है।

इस्लामी शैली में सरकारी भवन

मेवात में जो भी सरकारी भवन बन रहे हैं, उनमें इस्लामी शैली की छाप स्पष्ट रूप से दिखती है। उदाहरण के लिए आप नूंह में बन रहे नए सचिवालय और नूंह के पास ही नल्लड़ गाँव में बन रहे चिकित्सा महाविद्यालय को ले सकते हैं। ये दोनों भवन इस्लामी शैली में बन रहे हैं। इनमें मस्जिद की तरह मीनारें और गुम्बद हैं। क्या हिन्दूबहुल क्षेत्र में कोई सरकारी भवन मन्दिर की शैली में बन सकता है ? यदि नहीं तो मेवात में ऐसा क्यों हो रहा है ? मांडीखेड़ा का अल-आफिया जनरल अस्पताल, जिसका निर्माण ओमान के सुल्तान ने अपनी बेटी के नाम पर किया है, भी पूरी तरह इस्लामी शैली में है। सवाल उठता है कि एक अस्पताल के भवन का निर्माण इस्लामी शैली में क्यों किया गया ? इसकी अनुमति किसने दी ?

पुलिस की पिटाई

मेवात में आए दिन पुलिसकर्मियों की पिटाई होती है। पिछले 10 महीने में ऐसी 40 घटनाएँ हो चुकी हैं। जब भी पुलिस किसी अपराधी, तस्कर, बलात्कारी या हत्यारे की धर-पकड़ के लिए जाती है तो स्थानीय लोग पुलिसकर्मियों को घेर कर पीटते हैं। दिल्ली में भी मेवात के युवा डकैती, हत्या, छीना-झपटी, बलात्कार आदि घटनाओं में शामिल पाए जाते हैं। दिल्ली में उन्हें 'मेवाती गिरोह' के नाम से जाना जाता है। जब भी दिल्ली

पुलिस मेवाती गिरोह के किसी अपराधी को पकड़ने के लिए मेवात जाती है, तो उसकी भी पिटाई होती है।

सामाजिक संगठन

मेवात में हिन्दुओं का हौसला बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक, भाजपा एवं आर्य समाज के कार्यकर्ता और कुछ अन्य संगठनों के लोग प्रयासरत हैं। प्रो. जयदेव आर्य कहते हैं, **'जब भी हिन्दुओं के साथ कोई घटना होती है। इन संगठनों के कार्यकर्त्ता ही उनकी ओर से आवाज उठाते हैं। इसके बाद ही प्रशासन हिन्दुओं की रक्षा के लिए कुछ कदम उठता है।'** भारतीय शुद्धि सभा एवं गोरक्षा समिति के बैनर तले मेवात में काम कर रहे सामाजिक कार्यकर्त्ता **सुन्दर मुनि** कहते हैं, 'मेवात में स्थिति तब ठीक हो सकती है जब मेव मुस्लिमों को उनकी प्राचीन संस्कृति से अवगत कराया जाए। उन्हें यह बताने की जरूरत है कि मेवात के हिन्दुओं और मुस्लिमों का खून एक ही है, फिर अपने हिन्दू भाईयों को प्रताड़ित क्यों कर रहे हो ?'

मेवात से हिन्दुओं को भगाया जा रहा है, दूसरी ओर म्यांमार से भगाए गए रोहिंग्यायी मुस्लिमों और बंगलादेशी घुसपैठियों को बसाया जा रहा है। इन मुस्लिमों को मेवात में बसाने में कई मजहबी संगठन मदद कर रहे हैं।

गाँवों में मन्दिरों की जमीन और श्मशान भूमि पर स्थानीय मुस्लिमों ने कब्जा कर लिया है। इस कारण जो भी हिन्दू बचे हैं उन्हें बड़ी कठिनाई होती है। हिन्दू अपने किसी मृत परिजन का अन्तिम संस्कार सड़क के किनारे करने को मजबूर हैं। हिन्दुओं की पीड़ा सेकुलर मीडिया के लिए खबर नहीं बन पाती है, जो और भी पीड़ादायक है।

यह है भारत के इस्लामीकरण की एक झांकी।

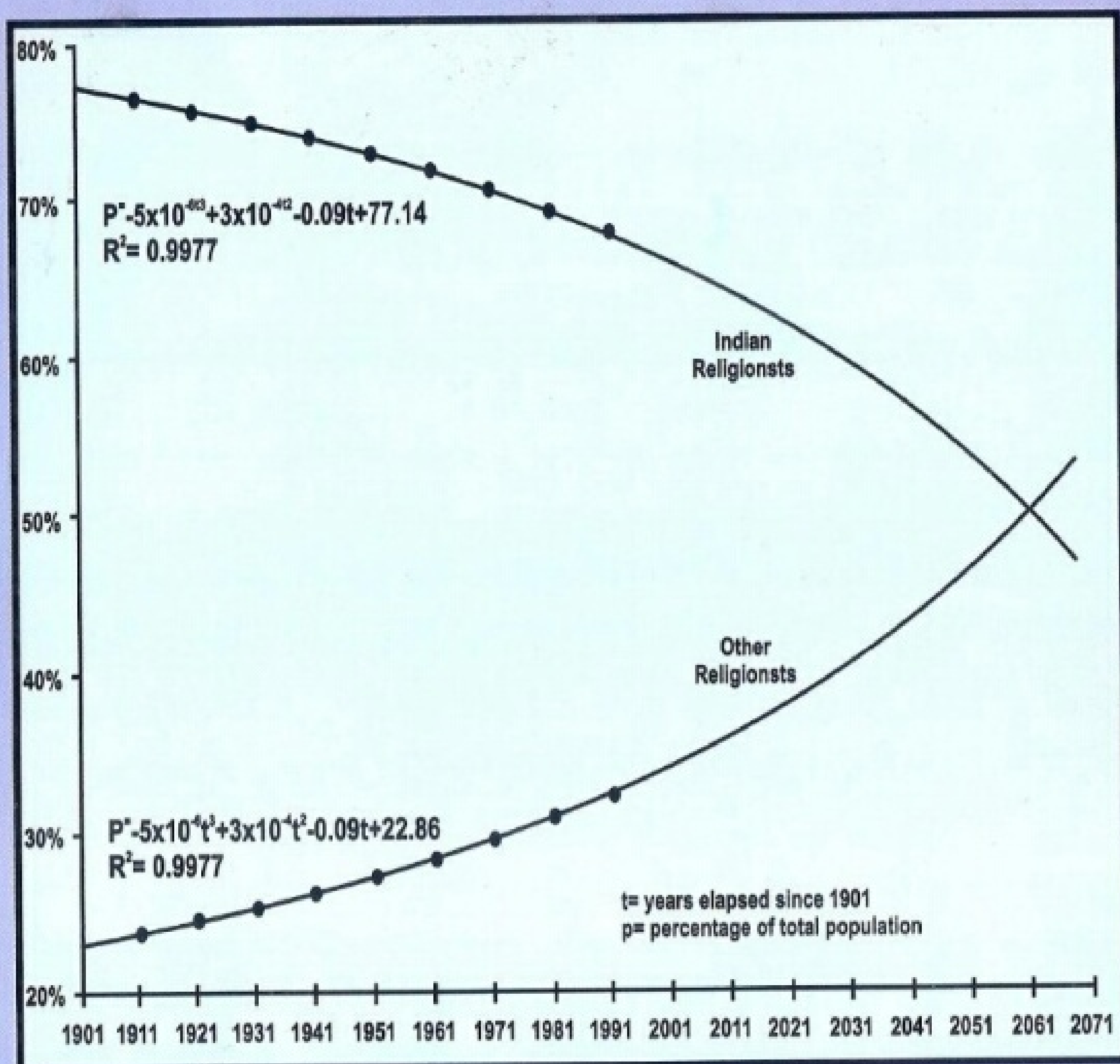
साभार, पाञ्चजन्य साप्ताहिक, नई दिल्ली, 25 नवम्बर 2012

1 रुपया

प्रकाशक

हिन्दू राईटर्स फोरम

129, बी.एम.आई.जी., राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-27



Growth Trends of Indian (Hinduism) and Other Religionists *(Muslims and Christians)* in india, 1901-2071
(-A.P. Joshi etal, Religious Demography of india, 2003)

सहयोग राशि ₹ 10/-
द्वितीय संस्करण 2014 , 2017

प्रकाशक
हिन्दू राईटर्स फोरम
129–बी, डी.डी.ए. फ्लैट्स (एम.आई.जी.)
राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110027
फोन–25115281 , 9560661441